वर्ष 35 अंक : 5 28.9.2012 शुक्रवार (सितंबर-अक्तुबर) शुल्क – प्रति अंक : ₹ 10.00 वार्षिक : ₹ 50.00

भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये।

[વિશિષ્ટ અનુગ્રહ]

[illegible]

શિકાગો [illegible]

ગુરુવર્ય શ્રી યોગીજી મહારાજને ને [illegible] સ્વામીજી મહારાજને
આપેલ પરિતોષ તે આપણે [illegible] કરી
આપણા માટે અક્ષરધામનું સુખ [illegible] પ્રગટ થાય
ને
આત્મનિષ્ઠાનું દુર્લભમાં દુર્લભ તે સિદ્ધ થાય
તેનું તદ્દન સરળ કરી [illegible] આપવા
તો
નિર્દોષબુદ્ધિના [illegible] ગુણાતીત સમાજ
[illegible] પદ્ધતિએ ખાસ છે
ને એ "આત્મ-તત્ત્વજ્ઞાનનો [illegible]" - સહુ [illegible].
તો — આવો આવો -
સૌ [illegible], [illegible], [illegible], બહેનો ને [illegible] આવો -
[illegible] અંતરાય વિના - આપણે સૌ એકમના - [illegible] થઈ
સહુ [illegible] પણ [illegible] ને પ્રેમથી [illegible]
ને
ઉઠો ઉઠો [illegible] -
કોઈક [illegible], કોઈક [illegible] કે [illegible]
કે [illegible] ગયા હોય -
[illegible] ન રહ્યા હોય - [illegible], માન - ઈર્ષા - [illegible] હોય -
[illegible] હોય - ને એવો સાધુતા ન [illegible] હોય -
તો - ગુરુહરિ [illegible] નહિ
ને તેઓ [illegible] આવે [illegible] પ્રાર્થના [illegible] નહિ -

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री, ११६

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

[illegible] પ્રત્યુત્ર પણ [illegible] - નો વિનય ન સ્વીકારે [illegible]

[illegible] - [illegible] ઉદય અનુસાર છે -

પ.પૂ. [illegible], પ.પૂ. [illegible] ને પ.પૂ. [illegible] ના

[illegible] - [illegible]

એ [illegible] [illegible] ગુરુજનો

[illegible] મૈત્રીભાવ [illegible] [illegible] ના

સાધનાની — સંપૂર્ણ પૂર્ણાહુતિ થશે ને

[illegible] [illegible] સર્વ પ્રકારે [illegible]

[illegible] અનુભવશે [illegible] કરશે

ને

[illegible] આપનાર [illegible] [illegible] [illegible]

તો -

હે પ્રભુ, હે આપ - હે સર્વ મોટેરાં [illegible]

આપના ઉપર વિશિષ્ટ અનુગ્રહ છે -

અમારી પર દૃષ્ટિ કરી - [illegible] - [illegible] [illegible]

[illegible] - [illegible] સરળતા - ને સાધુતા [illegible] ગુણનાં પ્રકારે

ને [illegible] [illegible] [illegible] ને વિરોધ વિના -

[illegible] [illegible] ગુરુ - સત્સંગની સેવા -

[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] !

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] પ્રાર્થના કરે

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] - [illegible] [illegible]

[illegible]

सुस्वागतम्... विजयादशमी, शरद्पूर्णिमा, दीपावली - नूतन वर्ष!

१३-१४ नवंबर २०१२– दीवाली एवं नूतन वर्ष...

दीवाली यानि– आनंद, उल्लास, उमंग का उत्सव!

दीवाली यानि– मोहरूपी अज्ञान के अंधकार से निकल कर ज्ञान के प्रकाश-उजाले की ओर प्रस्थान!

दीवाली यानि– प्रेम, श्रद्धा और उत्साह से नई क्षितिज की ओर बढ़ते हुए, जगत के विषयों-भोगों से निर्लिप्त होकर, राग-द्वेष, ईर्ष्या, तृष्णा, मद, मत्सर–आदि कुलित वासनाओं का त्याग करके नूतन वर्ष में पदार्पण करने और प्रगट प्रभु व संत के तेज से भरपूर होने का मंगल पर्व...

दीवाली यानि– मात्र बाह्य दीप प्रज्जवलित या आतिशबाजी करना या स्वादिष्ट मिष्ठान-पकवान खाकर खुशी मनाना ही नहीं, बल्कि प्रगट संत से पाए गुणातीत ज्ञानरूपी भोजन की जुगाली करते हुए अंतर में जागरूकता के दीप प्रगटाना।

'भगवत् कृपा' के **मुखपृष्ठ** पर **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज** द्वारा १९८४ में शिकागो से **'नूतन वर्ष'** के निमित्त भेजे आशीर्वाद के एक-एक शब्द का मर्म समझने का प्रयास करेंगे, तो ख्याल आएगा कि **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज** ने बख़्शिश में कैसा दुर्लभ आशिष प्रदान किया–

'विरोध प्रकृति वाले के साथ मैत्री करोगे, तो ब्राह्मीस्थिति पा जाओगे।'

हज़ारों साल की तपस्या करने के बाद भी ऋषि-मुनियों को जो उपलब्धि नहीं होती,
उसे ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज जैसी प्रभुधारक विभूति ने कैसी सहजता और ऑथेन्टिसीटी से प्रदान किया!
किसी भी शास्त्रादि से ऐसी तरकीब पाएँगे क्या?
इसे तो वाकई उनका **'अनुग्रह'** ❖ ही कहा जाए!
पर, भीतर में टटोलें कि ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज को स्थूल रूप से विदा हुए छब्बीस साल बीत गए,
फिर भी, हमने विरोध प्रकृति वालों के साथ मैत्री की है क्या?
हम तो विरोध प्रकृति वाले को सामने दिखाई पड़ते ही, वहाँ से इधर-उधर होकर
उसे एवोईड करने का प्रयास करते हैं और मन ही मन खुद को सांत्वना देते हैं कि हम उससे भिड़े नहीं, न!
सालों से अपने ढाँचे के मुताबिक ही जीते रहने का रवैया हमने नहीं छोड़ा
और
खुद के मन से यूँ समझौता बनाए रखा है।
लेकिन, वे तो आज भी प्रगट-प्रत्यक्ष रह कर हमारे लिए सब कुछ लुटाने के लिए तत्पर हैं।
अब बस हमारी देरी से ही देरी है।

सो, दीवाली एवं नूतन वर्ष २०६९ के आगमन पर अन्य कोई उद्यम या प्रार्थना न करते हुए, **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज** के **विशिष्ट अनुग्रह** को झेल लें और प्रगट स्वरुपों की दिव्य योजना को साकार करने के लिए, अपनी मान्यताओं, अपने आदर्शों या संस्था से नहीं, बल्कि हमें मिले प्रगट स्वरूप से ही चिपके रह कर, उनके नक्शेकदम पर चलने को तत्पर हों–ऐसी उनके श्रीचरणों में प्रार्थना...

❖ पढ़िये पृष्ठ ५ पर...

[विशिष्ट अनुग्रह]

।। स्वामिश्रीजी सत्य हैं।।

शिकागो
२७-८-८४

गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज और संतवर्य योगीजी महाराज ने अथक् परिश्रम और अनेक अपमान सहन करके, हमें अक्षरधाम का सुख जीतेजी प्राप्त कराने और दुर्लभ से दुर्लभ 'एकांतिकभाव' सिद्ध कराने का मार्ग बिल्कुल आसान करके, दिव्यजीवन की अनोखी मौज दे दी है।

सो,

निर्दोषबुद्धि के ही नियम से, देश-विदेश में, समग्र गुणातीत समाज शीघ्रातिशीघ्र बढ़ता जा रहा है।

अब **'अक्षरपुरुषोत्तम तत्त्वज्ञान का स्वर्ण कलश'** चढ़ जाएगा।

तो, आओ! आओ!

सभी संत, मुक्त, युवक, बहनें और गृहस्थ आओ–

आपस में तनिक भी अंतराय रखे बिना-हम सभी मिलजुल कर-'एक मन' के होकर

अल्प संबंध वाले भक्तों की भी महिमा समझ कर प्रेम से मिलें।

यदि दस-बीस-पच्चीस वर्ष के बाद भी अंतर की गहराईयों में

कहीं 'काना वाघेला', कहीं क्षत्रिय का तेज़तर्रार लड़ाकूभाव

या

'मयाराम भट्ट' की भाँति ब्राह्मण की 'भद्रंभद्रता'

या

हज़ारों साल तक तप कर करके, मिट्टी के ढेर से लद जाने के बावजूद भी

ऋषियों की भाँति क्रोध एवं वासना के भाव गए न हों,

स्वभाव टले न हों, हठ, मान, ईर्ष्या, भेदभाव रह गया हो,

मनुष्यभाव आ जाता हो और **सच्ची साधुता न प्रगटी** हो–तो, गुण से परे हो ही नहीं पाएँगे।

सो, प्रभु और अतिशय बड़े संत को प्रार्थना भी नहीं पहुँचेगी,

और जीव कदापि ब्रह्मरूप भी नहीं होगा। सो वे हमारी सेवा भी अंगीकार नहीं करेंगे।

परंतु, अतिशय बड़े संत का केवल **'अनुग्रह'** है,

प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी और प.पू. काकाजी के अंतर के शुभाशीष हैं ही कि

भिन्न अंग वाले दो समकक्षा के मुक्तों के साथ सद्भावना से मैत्रीभाव दृढ़ करोगे तो

साधना की संपूर्ण पूर्णाहुति अवश्य होगी और ब्राह्मीस्थिति प्राप्त करके,

हर प्रकार से, भगवान का ही दिव्य सुख अनुभव कर पाओगे, भोग पाओगे और प्राप्त करोगे

एवं

संपर्क में आने वाले सभी को भी खुले दिल से दे पाओगे।

तो–

'हे प्रभु! हे बापा! हे सभी बड़े स्वरूपों!

*आप अपने **'विशिष्ट अनुग्रह'** से, हम पर कृपा दृष्टि करके,*

सूझ देकर, सुरुचि प्रगटाना जिससे ऐसी सरलता व साधुता हमारे जीवन में प्रगटे

और

समग्र सत्संग ही दिव्य माना जाए और सभी मुक्त बिना किसी भेदभाव एवं विरोध के,
मिलजुल कर आपके अभिप्राय के मुताबिक निष्कामभक्ति – सत्संग की सेवा कर सकें
ऐसी दया-कृपा – प्रसन्नता बरसाना!'

इस प्रकार इस वर्ष सभी दृढ़ **'सत्यसंकल्प'** होकर प्रार्थना करें
जिससे कि ऐसी सुरुचि प्रगटे और बड़ों के ऐसे **उत्तम प्रकार के अनुग्रह के हम पात्र बनें !**
इसी अभीप्सा के साथ–
आपके ही **दादुकाका** के नूतन वर्ष के
हार्दिक जय स्वामिनारायण!

***

[❖१९९७ में प.पू. पप्पाजी ने दिल्ली में **'अनुग्रह'** के गूढ़ार्थ को समझाते हुए जो निम्न स्पष्टीकरण किया था, उसे पढ़ेंगे तो ख्याल आएगा कि आख़िर-आख़िर में ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज हम सब पर फिदा होने के लिए कैसे तत्पर थे...]

स्वामिश्रीजी

दिल्ली
१-२-९७

गुणातीत स्वरूप के अंतर की जब प्रसन्नता हो,
तब ही **साधक** उच्च स्थिति – एकांतिकभाव सिद्ध करता है।
गुणातीत स्वरूप तो सूर्य जैसे हैं।
जो भी चैतन्य उनके संबंध में आते हैं, उन पर वे प्रसन्न होते ही हैं।
लेकिन, वारिस बनाने में फर्क पड़ता है।
वारिस बनाने के लिए शास्त्र में तीन तरीके बताए हैं।
सेवा – स्मृति – कृपा।
'अनुग्रह' यानि –
'कृपा' भी ऐसे साधक के ऊपर करते हैं
जो अपनी निगाह सिर्फ स्वरूप की ओर रखते हुए ही
प्रत्येक क्रिया करते हो – मनसा, वाचा, कर्मणा!
लेकिन 'अनुग्रह' – तो,
चाहे कैसा भी साधक हो उस पर भी –
यदि वह स्वरूप की दृष्टि में आ जाए तो – बिना कहे - मांगे कृपा करते हैं।
इसे **'अनुग्रह'** कहा जाता है।
चाहे वह साधक अपने ढंग से, स्वरूप को पसंद न हो, यूँ बर्ताव करता हो, तब भी –
उसके बर्ताव पर ध्यान दिए बिना – उस पर **प्रसन्नता उड़ेलते ही रहते हैं।**
अर्जुन पर कृष्ण ने ऐसी प्रसन्नता उड़ेली थी और अपना वारिस बनाया!
नो मॅरिट कृपा – 'हरा अनुग्रह' गुरु करते हैं।

– प.पू. पप्पाजी

[*મૂળ ગુજરાતી*]

૧૯૯૭માં પ.પૂ. પપ્પાજીએ દિલ્હીમાં 'અનુગ્રહ'નો ગૂઢાર્થ સમજાવતાં જે સ્પષ્ટીકરણ કરેલ તે વાંચીશું, તો ખ્યાલ આવશે કે છેલ્લે-છેલ્લે બ્રહ્મસ્વરૂપ કાકાશ્રી આપણાં બધાં પર ફિદા થઈ જવા કેવા તત્પર થઈ ગયેલા.

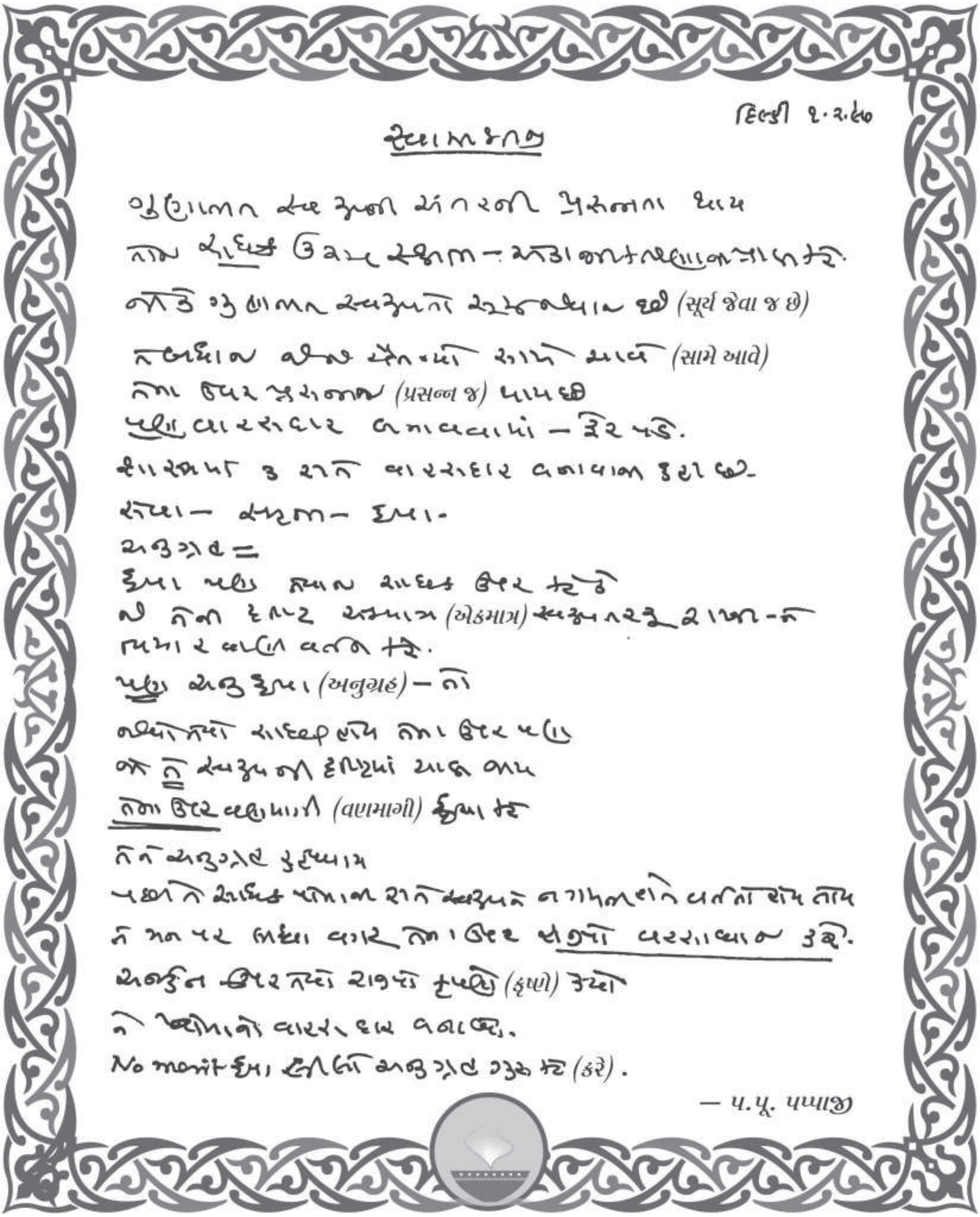

દિલ્હી ૧.૨.૯૦

[illegible]

ગુણાતીત સ્વરૂપની અંતરની પ્રસન્નતા થાય
[illegible]
કારણ કે ગુણાતીત સ્વરૂપનો [illegible] (સૂર્ય જેવા જ છે)
[illegible] (સામે આવે)
તેના ઉપર [illegible] (પ્રસન્ન જ) થાય છે
[illegible] – [illegible].
[illegible]
દયા – કરુણા – કૃપા.
અનુગ્રહ =
[illegible]
[illegible] (એકમાત્ર) [illegible]
[illegible].
પણ [illegible] (અનુગ્રહ) – તો
[illegible]
[illegible]
તેના ઉપર [illegible] (વણમાગી) કૃપા થાય
તે અનુગ્રહ [illegible]
[illegible]
[illegible].
અર્જુન ઉપર [illegible] (કૃષ્ણે) [illegible]
[illegible].
No merit [illegible] (કરે).

— પ.પૂ. પપ્પાજી

२४ अक्तुबर २०१२– विजयादशमी... विजय दिन !

आसुरीवृत्ति का संहार करने हेतु संपूर्ण रामायण रची गई। भले ही रावणरूपी आसुरीवृत्ति से सीतारूपी भक्ति का हरण हुआ, लेकिन अंततः जीत 'भक्ति' की ही हुई। जैसे श्री रामचंद्रजी ने युद्ध करके भक्तिरूपी सीताजी को मुक्ति दिलाई, यूँ **'प्रभु को अखंड धारे संत'** अपने आश्रित को प्रकृति-स्वभावरूपी जड़बंधनों से शीघ्र एवं सहजभाव से मुक्त करवाने को तत्पर रहते हैं। और... इसी हेतु गुरुहरि योगीजी महाराज ने गुणातीत समाज के मुक्तों पर खूब कृपा करके आज ही के दिन गोंडल मंदिर–अक्षरदेरी में **प्रगट ब्रह्मस्वरुप हरिप्रसादस्वामिजी को पार्षदी दीक्षा** देकर, गुणातीत पीढ़ी के एक वारिसदार की न केवल सौगात दी, बल्कि उनके संबंध में आए मुक्तों को परम धन्यता भी बख़्शी!

२९ अक्तुबर २०१२– शरदपूर्णिमा...

शरद ऋतु का चांद कुछ अलग ही प्रकार की शीतलता प्रदान करता है। यह एक बहुत सांकेतिक दिन है क्योंकि भगवान स्वामिनारायण द्वारा प्रवर्ताई गई रीति-नीति को जिन्होंने संपूर्ण रूप से आत्मसात् किया, ऐसे **अक्षरब्रह्म गुणातीतानंदस्वामिजी** को प्रभु अपने साथ लाए और जन्मों से मुमुक्षुओं के सुलगते हृदय में प्राप्ति की महिमा की नीरव एवं सच्ची ठंडक शाश्वत् कर दी।

दरअसल, गुरु गुणातीत के रूप में **'साकार ब्रह्म'** का पृथ्वी पर जो प्राकट्य हुआ, उसकी गहनता का हमें अनुमान भी नहीं है। वह कोई **'अलग ही तत्त्व'** है, जो सभी को अक्षरधाम का सुख 'मौज में' लुटाने के लिए आया! सो ही **'स्वामी की बातों'** में लिखा है– *'ए प्रदेश ज नोखो...'* यानि–यह प्रदेश ही अलग है। लेकिन क्या भगतजी-जागास्वामी-अदाश्री जैसे एकल-दोकल के सिवा किसी ने उन्हें पहचाना और उनका-उनकी बातों का-भरोसा किया? क्या यह माना गया कि उनके होकर रहेंगे, तो सच में 'मौज में' ही देने के लिए वे आए हैं।

ब्रह्मस्वरुप काकाजी महाराज पूछते भी थे– *मौज का मूल्य होता है क्या?*

हम बातों में सुनते भी हैं कि मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी ने आकर साधना के मार्ग पर सेरे लगा दिए; लेकिन यह बात मानी गई क्या? **ब्रह्मस्वरुप योगीबापा** ने बात की थी–

जूनागढ़ में एक हरिभक्त ने स्वामी को आम दिया। स्वामी के आम चूस लेने के बाद,
उसकी गुठली हरिभक्त ने ले ली। उसे बोकर प्रसादी का आम का पेड़ उगाने की उसकी इच्छा थी।
परंतु, स्वामी ने तुरंत कहा – 'इसका कारण शरीर खाक हो गया।'
यूँ, बड़े पुरुष के (गुणातीतभाव में अखंड रहते ब्रह्मस्वरुप संत के) संबंध में–दृष्टि में आ जाएँ, तो कारण शरीर का नाश हो जाता है। इसी तरह, स्वामी ने दृष्टि मात्र से बेर के पेड़ की जड़ का कारण शरीर भी भस्म कर दिया था।

तब जागास्वामी ने पूछा था – स्वामी! कारियाणी के १२वें वचनामृत में तो कहा है कि भगवान के ध्यान और वचन से कारण शरीर जल जाता है, तो बेर के ठूंठ का कारण शरीर कैसे जल गया?

*स्वामी ने प्रत्युत्तर दिया था – **'बड़े संत की कृपा दृष्टि हो, वहाँ शास्त्रों के शब्दों की आड़ नहीं टिकती!'***

(योगीवाणी, पृ. ११२, २०)

हम सभी ऐसी दृष्टि वाले ही हैं, लेकिन यह बात सच मानते हैं क्या?

इसीलिए तो **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज** अपनी लाक्षणिक अदा में कहते –

यह घड़ी मेरी है और मुझे जो पसंद हो, उसे मैं दे दूँ, तो मुझसे कोई पूछेगा क्या? मालिक का कोई मालिक है क्या?

ऐसी 'गुणातीत' की बात है। लेकिन, साथ ही वे कहते –

ऐसे ही कोई रास्ते पर जाने वाले को थोड़े ही दी जाती है? जिस पर कृपादृष्टि हुई हो – जो अपना हो-अपना बने, उसे ही देंगे न!

प.पू. गुरुजी भी कई बार समझाते हैं –

शास्त्रों में भगवान को समदर्शी कहा है; वो तो, जो भी उनका होकर जीना चाहे, उसको मौका देने में भगवान को कोई पक्षपात नहीं – यह तात्पर्य है।

*परंतु, भगवान समदर्शी नहीं हैं; क्योंकि **गीता** में भगवान ने ही यह स्पष्ट कह दिया है –*

*'न **मे भक्तः** प्रणश्यति' अर्थात् – '**मेरे भक्त** का नाश नहीं होगा!' यहाँ '**मेरा**' शब्द का प्रयोग हुआ है। यही अपने और पराये के भेद का द्योतक है न? पर, बात के मर्म को पकड़े बिना उसकी तथ्यता को हम कैसे अनुभव कर सकेंगे?*

तो, आओ! अक्षर का सुख पाने के लिए, मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी के प्राकट्योत्सव निमित्त, उनके प्राकट्य के हेतु को समझ कर, उनके द्वारा मिली मौज को जानें...

एक बार मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी ने श्रीजी महाराज से पूछा –

ध्यान करना, सेवा करनी, बातें करनी और स्वयं को आत्मारूप जान कर वर्तना – इनमें से श्रेष्ठ क्या?

तब महाराज ने *'बातें करनी'* श्रेष्ठ बताया।

तब से मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी जीवनपर्यंत लगातार 'बातें' ही करते रहे और उनकी ऐसी परावाणी का सभी लाभ ले सकें, इस हेतु से श्रीजी महाराज ने सभी को – बड़े-बड़े संतों को भी – वर्ष में एक महीना जूनागढ़ जाकर मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी का समागम करने की आज्ञा दी थी। श्रीजी महाराज की आज्ञा का पालन बड़े-बड़े सद्गुरु भी करते। स्वामिश्री के समागम के लिए संत जब जूनागढ़ आते, तब स्वामी अपनी बातों की फूँक से उनके कई संशयों को अंगारे पर चढ़ी राख की भाँति उड़ा देते और वे स्फटिकसम शुद्ध बन कर, कामादिक दोषों से रहित हो जाते... सर्वोपरि निष्ठा से श्रीजीमय बन जाते।

यूँ, एक बार सद्. नित्यानंदस्वामी समागम के लिए जूनागढ़ गए थे। लेकिन, गुरु गुणातीत तो अपने आपको नैपथ्य में रख कर सद्. नित्यानंदस्वामी से कथा करवाते और स्वयं सुनते या मंदिर की किसी प्रवृत्ति में व्यस्त रहते।

एक दिन सद्. नित्यानंदस्वामी ने उन्हें कहा – *स्वामी, मैं तो यहाँ आपकी कथा सुनने के लिए आया हूँ। तो आप थोड़ी बात तो करो।*

स्वामिश्री ने खूब सीधी-सादी, लेकिन मर्म की बात की –

पूर्वाश्रम में एक बार मैं बैल खरीदने गया था। वहाँ दिखने में एक जैसे दो बैल थे। लेकिन दोनों के भाव में फर्क था। एक की ३० कोड़ी और दूसरे की ६० कोड़ी कीमत थी। मैंने इस फर्क का कारण पूछा, तो बैल के मालिक

ने उत्तर दिया – ६० कोड़ी वाले बैल का मैंने खुद पालन-पोषण किया है। सो, वह कितना भी बोझा उठाने में सक्षम है, वह घुटने नहीं मोड़ेगा - बैठ नहीं जाएगा। यह दूसरा बैल तो कहीं से खरीदा हुआ है। सो, इसकी जात का मैं भरोसा नहीं दे सकता।

स्वामिश्री ने इसका रहस्य समझाते हुए कहा –

हमें भी महाराज ने खुद अनगिनत रातों को जाग कर-जगा कर, प्रकृति-पुरुष से पर का यह ज्ञान परोसा है। तो हम कभी भी पीछे हट न करें। सर्वावतारी महाराज को सामान्य 'अवतार' जैसा कह कर उपासना में घुटने न मोड़ लें। घुटने मोड़ने यानि – पानी में डूबे रहना। यदि पानी में यूँ डूब जाएँगे, तो श्वास बंद हो जाएगा और तब मृत्यु निश्चित है। मृत्यु यानि पूर्णविराम!

हमारे लिए – 'ऐसी प्राप्ति का मर्म यदि हम नहीं जान पाए' – तो, वो पूर्णविराम!

सामान्यतः शास्त्र-पुराणों के सीमित दायरों में घिरी हमारी प्राकृत सोच के कारण, हम ब्रह्मस्वरूप गुणातीत संत का **मूल्यांकन** उनके धर्म, ज्ञान, तप, त्याग, वैराग्यादि **गुण से** एवं ऐश्वर्य-प्रताप, रिद्धि-सिद्धि के **वैभव से** या वे खूब सेवाभावी, प्रकृति से गरीब, सीधे-सादे, सरल, संयमी एवं धर्म-नियम के पक्के हैं – ऐसा सोच कर उनके **आचरण के** आधार पर करते रहते हैं। पर, गुणातीतभाव में अखंड रहते **गुरुहरि योगीजी महाराज** द्वारा कही बात पर गौर करें –

'...धर्म, ज्ञान, वैराग्य, भक्ति वाला तो प्राथमिक शिक्षा लेता है। उनसे 'गुणातीत' तो अलग ही हैं।'

(योगीवाणी, पृ. १८३, २८)

मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी ने स्वयं भी मानो इसी तथ्य को निम्न बात से उजागर किया है –

'...जो संत अपने हृदयाकाश में महाराज को अखंड धार कर रखते हैं, वे संत ज्ञानी, ध्यानी, प्रेमी से बड़े हैं।'

(स्वामी की बातें – प्र. १३, ३५)

इस बात से यह तो स्पष्ट होता ही है कि **भले ही कोई संत कितना ही ज्ञानी, ध्यानी, तपस्वी हो... पर, उसके पास भगवान न भी हों!** और... जिस के पास भगवान नहीं होंगे, वह भला भगवान की मूर्ति का सुख हमें कहाँ से दे पाएगा? लेकिन, **साधारणतया हम पर गुण एवं वैभव का प्रभाव रहता है।** सो, ऐसे असली संत – गुणातीत संत को हम पहचान नहीं पाते। बोलते तो हैं – ***'भगवान साधे वो साधु।'*** फिर यह बात कहाँ चरितार्थ होगी? **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज** कहते –

अरे! अपने सामर्थ्य को दबा कर – छिपा कर रहना, यही असली संत की सच्ची ताक़त है।

वे संत कौन-सी चेतना पर काम करते हैं, उनकी आंतरिक चेतना कौन-सी है, यह देखो। यूँ हम उन्हें 'गुण से – वैभव से' न परखें, तत्त्व से परखें।

अखंड गुणातीतभाव में स्थित संत ही 'असली साधु' का *'रोल मॉडल'* है और जैसे कि **पू. वशीभाई** ने अधिक मास की पारायण में बताया –

मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी का ऐसा दर्शन श्रीजी महाराज ने कराया भी है। *श्रीजी महाराज ने मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी को दो महीने 'बुरानपुर' और 'खानदेश' में स्त्रियों की सभा में कथावार्ता*

*करने की आज्ञा दी और दर्शाया कि **साधुता के मूर्तस्वरूप मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी के रूप में उन्होंने स्त्री-पुरुषभाव से परे 'गुणातीतभाव' में अखंड रहते 'रोल मॉडल' की अमूल्य भेंट दी है।***

ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज इसी बात को कई बार दोहरा चुके हैं–

'आगे जाकर, यानि – गुणातीतभाव में स्त्री-पुरुष भाव भी नहीं रहने वाला!'

पर, क्या इस बात को हमने सच माना है?

फिर भी, हम सभी खूब भाग्यशाली हैं कि श्रीजी महाराज ने मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी के द्वारा ब्रह्मस्वरूप संतों-मुक्तों की एक अखंड परंपरा देकर अपने सातत्य का पल-पल एहसास कराया है।

प.पू. गुरुजी अकसर बताते हैं कि वे १९५४ से **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज** के संपर्क में आए। तब से, १९८६ तक – यानि जब तक वे स्थूल रूप से हाज़िर रहे – मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी की भाँति, उन्हें निरंतर गुरुहरि योगीजी महाराज की महिमा की बातें ही करते देखा है। सुबह छः बजे से मानो, शेविंग करते-करते कथा की शुरुआत होती और रात को विश्राम में जाने तक लगातार कथावार्ता का दौर चलता ही रहता। वह भी इस हद तक कि वे बाहर गए हों, तो गाड़ी में भी बातें करते या धुन करते-करवाते आते और जिस जगह पहुँचते वहाँ भी बातें ही कर रहे होते। उनके मुख पर तनिक भी थकान दिखाई नहीं देती थी; बल्कि धुन व कथावार्ता करके वे फ्रेश हो जाते। इसी प्रकार, स्त्री-पुरुषभाव से परे ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज स्वयं तो गुणातीतभाव में सदैव जिए ही, साथ ही **उनका यही उद्यम रहा कि उनके संबंध में आए मुमुक्षु भी 'गुणातीतभाव' में स्थित हो जाएँ।**

अक्षरधाम की दिव्य विभूति गुरुहरि योगीजी महाराज ने अपनी प्रसन्नता उड़ेलते हुए ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज को ३ फरवरी १९५२ में साक्षात्कार कराया – एक अनुभूति कराई और **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज** ने एक अटूट विश्वास से महाराज के सतत प्राकट्य का **'गुणातीत ज्ञान' मानो सामूहिक रूप से सभी को बांटा।**

उन्होंने **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी** की विशेषता उजागर करते हुए बताया है–

__'अक्षरब्रह्म'__ का यह सबसे बड़ा योगदान है कि

वे दिव्य शक्ति का आविर्भाव करा कर, जीव को शुद्ध करके ब्रह्मरूप करते हैं।

किसी भी प्रकार की अन्य साधना द्वारा यह कदापि संभव नहीं है।

गुणातीत ज्ञान की यह अनोखी विलक्षणता है।

'अक्षरब्रह्म' के प्रवेश से आध्यात्मिक विकास की समग्र प्रक्रिया में जड़ से परिवर्तन आया है;

यूँ कहें कि विकासक्रम की प्रक्रिया संपूर्णतया उलट गई है।

इस प्रकार, __'अक्षरब्रह्म'__ के प्रति अटूट श्रद्धा, साधना की एक असाधारण विशिष्टता है और वह कायम रहेगी।

परंपरागत आध्यात्मिक रीतियों और करामातों की अपेक्षा इस विशिष्टता ने एक क्रांतिकारी और रीमार्केबल रास्ता बनाया है।

जीव का आध्यात्मिक उत्थान करके, उसे शुद्ध करके, ब्रह्मस्वरूप करने की प्रक्रिया में

यह चेतनवंती क्रांति मूलतः एक परिवर्तन लाई है।

कई धर्म और संप्रदाय, जो परंपरागत पद्धतियों का प्रतिपादन करते हैं,
इस क्रांतिकारी विलक्षणता को भले ही स्वीकार न करें,
लेकिन 'पंचयज्ञ' की यह करामत इतनी तर्कयुक्त, तत्त्व ज्ञान से पूर्ण, शाश्वत् और अनुभवसिद्ध है कि
कोई भी इसमें तनिक भी शंका नहीं कर सकता, ना ही इसे गलत ठहरा सकता है!

– प.पू. काकाजी ; पंचयज्ञ, पृ. ९

विज्ञान में हुई प्रगति के कारण प्राप्त आधुनिक टेक्नोलॉजी से अनेक जटिल व असाध्य कार्य शीघ्र व सरलता से किए जा सकते हैं, ऐसा सभी अनुभव करते हैं। इसी प्रकार **'अक्षरब्रह्म' के मानवस्वरूप में आविर्भाव और सातत्य ने अध्यात्म में कई करामात बता कर, कुँजियाँ देकर, 'साधना मार्ग' की जटिलता दूर करके, खूबी से उसे सरल, छोटा और सहज कर दिया है।** जैसे कि **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज** कहते – *हज़ारों वर्ष की कठिन तपस्या के बावजूद जो वासना निर्मूल न हो और प्रकृति का परिवर्तन न हो, वह ऐसे संत के प्रति केवल सद्भावना एवं उनके संबंध वाले मुक्तों के साथ सुहृद्भाव रखने में सहज हो जाता है।*

यूँ, श्रीजी महाराज-मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी, गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज-गुरुहरि योगीजी महाराज को अखंड धारते हुए ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज संबंध में आए सभी के लिए, दिन-रात देखे बिना, 'गुणातीत ज्ञान' का मर्म खोलते ही रहे।

अब यह **हम पर निर्भर है कि अट्ठारवीं सदी के पुराने ढाँचे को छोड़ कर, इस ज्ञान को अपनाने के लिए हम कितने इच्छुक हैं।**

पर, बड़े पुरुषों की तो करूणा का भी पार ही नहीं। वे हमें प्रार्थना करने के लिए निरंतर मौका देते ही रहते हैं। सो, हम पर कृपा करते हुए ही **गुरुहरि योगीजी महाराज** ने शरदपूर्णिमा के ही दिन साधुता की अद्भुत मूर्ति के आदर्श समान **प्रगट ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामिजी** को गोंडल मंदिर में **भागवती दीक्षा** दी। **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज** के शब्दों में –

अपने पसंदीदा पात्र प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी को मानो अपना सब कुछ दे देने के लिए बैठे हों...
ऐसा उस समय उनके मुखारविंद और हाव-भाव से प्रतीत होता था। और... आज एहसास भी होता है कि सभी को प्रभु का संबंध देने के लिए उन्होंने कई चैतन्यों को अपने हाथों में थाम कर, उन्हें धन्य किया है। जैसे कि हाल ही में दिल्ली पधारे पू. कोठारीस्वामिजी ने अपनी बातों में प्रगट ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामिजी की वर्तमान इच्छा ज़ाहिर की कि वे अपने आशीर्वचन में हरिधाम या विदेश से फॅक्स द्वारा यही कहते हैं अथवा लिख कर भेजते हैं– *'दास के दास बनो...।'* सो, उनके दीक्षा पर्व पर उनके श्री चरणों में यही प्रार्थना कि आपके इस हार्द को समझ कर, उस पर खरे उतरने के लिए दृढ़ संकल्प करें और लग पड़े...

सच, शरदपूर्णिमा का अविस्मरणीय दिन तो गुणातीत समाज के इतिहास में त्रिवेणी संगम ही कहा जाए!
एक – **अक्षरब्रह्म गुणातीतानंदस्वामिजी का प्राकट्य दिन,**
दूसरा – **प्रगट ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामिजी का भागवती दीक्षा दिन**
और
तीसरा – ब्रह्मस्वरूप काकाजी के प्राण प्रिय एवं आज कई दिलों की धड़कन बने **प.पू. दिनकरभाई का प्राकट्य दिन...**

१९४४, १ अक्तुबर - शरदपूर्णिमा के मंगलकारी दिन पू. बेचरभाई एवं पू. दीवाळीबेन के यहाँ **हमारे प.पू. दिनकरभाई का प्राकट्य** हुआ। प.पू. दिनकरभाई की दादी पू. हरखबा के परिवार ने गुजरात के 'सावली' गाँव में रहते हुए स्वयं भगवान स्वामिनारायण से आशीर्वाद प्राप्त किया था। यूँ, देखा जाए तो प.पू. दिनकरभाई पहले से ही स्वामिनारायण संप्रदाय से जुड़े थे। गाँव 'उत्तरसंडा' में रहते हुए बचपन में वे स्वामिनारायण मंदिर में जाकर वचनामृत का पाठ करते। और... भगवान स्वामिनारायण की अनहद् कृपा के फलस्वरूप प.पू. दिनकरभाई ने गुणातीत विभूति ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज का अमेरिका - शिकागो में ७ जुलाई १९७३ को अपनी पत्नी अक्षरनिवासी पू. सुधा बहन के गुरु के रूप में प्रथम दर्शन किया। प्रथम दर्शन में ही वे ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के व्यक्तित्व से आकर्षित होकर लयलीन हो गए। अंग्रेजी में कहें तो– ***लव एट फर्स्ट साईट... !*** बाद में जब भी ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज शिकागो जाते, तो प.पू. दिनकरभाई के यहाँ ठहरते और धीरे -धीरे अमेरिका में स्वामिनारायण सत्संग के बीज पड़ने लगे। १९८० में पू. सुधा बहन अक्षरनिवासी हुईं। पिछले महीने ही अधिक मास निमित्त 'गुणातीत स्वरूप दर्शन' पारायण में ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के विषय में बात करते हुए प.पू. वशीभाई ने खूब गहराई की बात की थी कि पू. सुधा बहन के धाम जाने के बाद प.पू. दिनकरभाई प.पू. काकाजी के पास ताड़देव आए। उस समय ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज सोफे पर विराजमान थे। प.पू. भरतभाई और प.पू. बापु वहीं बैठे थे। प.पू. दिनकरभाई आकर एकदम नीचे बैठ गए और ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज से कहा–

मेरी पत्नी अब धाम में गई। तो, मैं एक फॅमिली ट्रस्ट बना कर अपने दोनों बच्चों को देकर आपकी सेवा में यहाँ रहना चाहता हूँ; मुझे और कुछ नहीं करना है।

लेकिन, **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज तो आगे का सब क्रिस्टल क्लियर देखते थे।** सो, उन्होंने कहा–
नहीं दिनकरभाई, आपको अमेरिका में ही रहना है। अमेरिका में सत्संग करना है।

खूब महत्त्व की बात है कि उस समय वॉकिगन – प.पू. दिनकरभाई के घर में श्रीजी महाराज की मूर्तिप्रतिष्ठा नहीं हुई थी, न ही डॅस्प्लेन का मंदिर था और न ही आज की भाँति साधक भाई तब वहाँ तैयार थे। परंतु, १९८१ – भगवान स्वामिनारायण की द्विशताब्दी के वर्ष में – २१ जून को प.पू. काकाजी ने श्रीजी महाराज की मूर्ति स्वयं प्रतिष्ठित करके, प.पू. दिनकरभाई के घर को मंदिर में परिवर्तित कर दिया! तत्पश्चात् १९८५ – मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी की द्विशताब्दी के वर्ष में – २० अक्तुबर के मंगलकारी दिन श्रीजी महाराज की मूर्ति के साथ मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी की मूर्ति स्थापित की।

स्थूल देह से प.पू. काकाजी का भले ही यह अमेरिका का आख़िरी दौर था पर **प.पू. गुरुजी के कहे अनुसार, प.पू. दिनकरभाई द्वारा तो आज भी विदेश में ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के प्राण धबक रहे हैं।** यूं, आज प.पू. दिनकरभाई तो भारत की भूमि से मीलों दूर अमेरिका में बसे कई मुमुक्षुओं के लिए ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज से मौजरूप मिली यह दिव्य विभूति आशिष के समान है। इनकी माहात्म्ययुक्त भक्ति से **ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज** एवं **प्रगट ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामिजी** जैसे गुणातीत स्वरुप भी खूब राजी हुए हैं। आइए, 'अक्षरधाम' सत्संग पत्रिका के सौजन्य से इनके इस प्राकट्य पर्व पर गुणातीत स्वरुपों द्वारा बरसी आशिष वर्षा की फुहार से प.पू. दिनकरभाई का माहात्म्य समझें...

प.पू. पप्पाजी महाराज के आशीर्वाद

काकाजी महाराज के आध्यात्मिक वारिसदार और प्रकृतिपुरुष तक का सब कुछ बेकार-वर्थलेस मान कर जीवन जीने वाले दिनकरभाई ने प.पू. काकाजी महाराज की ८०वीं जन्मजयंती को यू.एस.ए. में 'दिव्य एकता महोत्सव' के रूप में मनाया। काकाजी महाराज से संबंधित, मानते और नहीं मानते सभी को बुलाया और... काकाजी का भव्यातिभव्य दर्शन कराया। धन्यवाद!

साक्षात् महाराज, काकाजी महाराज को साक्षात् अक्षरधाम में से लाए। सो, वे तो जब से आए तब से ही स्वतंत्र रूप से, चैतन्य स्वरुप से ही, अक्षरधाम की रीति से ही इस जगत में बरते हैं।

१. किसी की भी परवाह नहीं की।

२. एक ध्येयनिष्ठा से महाराज के ही होकर स्वतंत्र रूप से वर्ते।

इसीलिए प्रकृतिपुरुष के मूल्याकंनों से जीते जगत के लोग उन्हें पहचान नहीं सके। तत्त्व से – वे जैसे हैं वैसे उन्हें भाँप नहीं सके। अतः जब अपना स्वार्थ हो, तब वे जैसा कहें वैसा वर्त लेते। लेकिन स्वार्थ सिद्ध हो जाते ही, उपेक्षा करते और मन, कर्म, वचन से उन्हें सेया नहीं। सो, कुछ गिने-चुने अक्षरमुक्तों ने ही सैद्धांतिक प्रसन्नता प्राप्त करके, उनके गुण पाए। दिनकरभाई उनमें से एक हैं।

*काकाजी महाराज की भाँति ही प्रकृतिपुरुष तक का सब कुछ बेकार-वर्थलेस समझ कर, उसकी उपेक्षा करते हुए वर्तते हैं। इसी कारण, महाराज और उनके संबंध वाले अक्षरमुक्तों की सेवा में, प्रकृतिपुरुष तक का लोक, भोग, देह और पक्ष – जो भी उपयुक्त हो, वह ग्रहण करके कार्य संपन्न होते ही छोड़ सकते हैं। इसकी वासना उन्हें जकड़े नहीं रखती। वे काकाजी महाराज की तरह ही पल-पल उनकी ही रीति से जी रहे हैं। इसका हमें दर्शन कराने के लिए ही **'दिव्य एकता महोत्सव'** का आयोजन हुआ है। यूँ, काकाजी महाराज अंतर्धान हुए ही नहीं। वे तो उनके ऐसे भक्तों के द्वारा चिरंजीव ही हैं।*

प्रकृतिपुरुष के अंदर जी रहे मुक्तों को यह मार्ग बताने के लिए स्वयं अक्षरधाम की रीति से जीकर प्रेरणा देते हैं और साथ ही साथ, जगत में इस रीति से वर्तने से हमारा कुछ बिगड़ने वाला नहीं है, यह दिखा रहे हैं। 'सत्संग रखेंगे, तो इस लोक का व्यवहार तो घिसटता हुआ अपने आप हमारे पीछे-पीछे आएगा' – गुणातीत की इस बात का साक्षात्कार करके, हमारे साथ जी रहे हैं और अक्षरधाम की रीति से कैसे जीया जाए, यह आदर्श गृहस्थी एवं त्यागी को बता रहे हैं। काकाजी महाराज का जो जीवन कार्य है, वे उसे अर्घ्य दे रहे हैं।

प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के आशीर्वाद

...हमें पू. दिनकरभाई की ओर नज़र रख कर जीने की खूब जरूरत है। दिनकरभाई की वाणी – केवल महिमा प्रधान, केवल संबंध वाली ही दृष्टि, कभी टीका-चर्चा नहीं, केवल पॉज़िटिव। ए टु ज़ेड क्लास के सभी हरिभक्तों के प्रति खूब प्रेमभाव। विवेक से बातें करते हुए और बहुत ही भक्त हृदय से बातें करते हुए मैंने उन्हें खूब निहारा है... करोड़ों गुण की अपेक्षा भगवान के संबंध से देखना-संबंध से जीना श्रेष्ठ है।

हम सभी सामने वाले के गुण देख कर बोलते हैं, सोचते हैं। जो संबंध देखे, उसे गुण व अवगुण कुछ नज़र में आएगा ही नहीं।

हमारी उपासना कैसी सर्वोपरि! प्रभु का संबंध हमें धरती पर कहाँ से? हमारे गुणातीत पुरुष कैसी दृष्टि रख कर जी गए? बापा ने विज्ञानस्वामिजी के साथ कैसा अनुपम दर्शन कराया है! ऐसे ही विचारों में, महिमा में - मुझे, तुम्हें... सभी को जीना है। तब वाणी बदल जाएगी। इस हेतु पू. दिनकरभाई को जरूर याद करना...

✡✡✡

श्रवण, मनन, निदिध्यासन

* क्या जगत छोड़ देना है? जगत में रहना है, कमल कीचड़ में रहता है कि नहीं? लेकिन उसे कीचड़ लगता है क्या? जगत में रहें, संसार में रहें, जल कमलवत्। जगत को छोड़ना भी नहीं, लेकिन उससे बंधे भी नहीं रहना है।
* जिसे भगवान और संत को राजी करना है, वो हर एक को राजी नहीं कर पाएगा।
* लोभ या ऐसा दोष बड़े संत में देखेंगे, तो हमारे दोष कभी नहीं जाएँगे। शास्त्रीजी महाराज मंदिर के लिए पैसे मांगते थे; कई टीका करने वाले कहते थे– *स्वामी बहुत लोभी हैं।*
* संत हमसे सेवा लेते हैं, हमसे प्रीति कराने के लिए। यदि हम में संत के प्रति निर्दोषबुद्धि हो, तो हमें उनसे प्रीति होगी। दोनों एक साथ चलते हैं; निर्दोषबुद्धि हो तो प्रीति होगी, प्रीति हो तो निर्दोषबुद्धि रहेगी।
* भगवान का सामर्थ्य मिल जाए, यानि ? भगवान का सामर्थ्य क्या? माया पराभव कर न पाए। माया में रहते हुए माया से वो निर्लेप रहेगा।
* कथा-कीर्तन कर-करके यही करना है कि दिव्यभाव रख कर निर्दोषबुद्धि से सेवा करनी है।
* हम में और साधु में यही फर्क होता है कि साधु तो तुम्हारे सौ अवगुण न देखकर, एक अच्छा गुण पकड़ कर, तुम्हारे साथ संबंध बनाए रखता है; जबकि हमें तो सौ गुण दिखाई पड़ते हों, पर हम उन्हें न देखकर एक अवगुण ही देखा करते हैं।
* एकांतिक का धर्म क्या ? भगवान के सिवा और कुछ रहे ही नहीं, यही एकांतिकभाव।
* **एकांतिक संत में कमियाँ या दोष देखोगे, तो मोक्ष का द्वार बंद हो जाएगा।** मतलब जहां से कुछ पाना है, उसी के झंझट में पड़ गए, तो मोक्ष का द्वार बंद हो जाएगा और **यदि दिव्यभाव हो, तो द्वार खुल जाएगा।** यह अगर सच में माना हुआ हो, तो मस्ती हमेशा रहे, मुंह लटकेगा नहीं।
* भक्तों की झंझट में न पड़ें। **जब तक भक्तों को दिव्य नहीं मानेंगे, समझना, हमने साधु को दिव्य माना ही नहीं है।** अगर साधु को दिव्य माना हो, तो भगत दिव्य माने ही जाएँगे। क्या शेर का बच्चा हमें चूहा लग सकता है? भले ही शुरुआत में कमज़ोर लगे, किन्तु है तो वो शेर का ही बच्चा।
* जो संत या मुक्त हमें दिव्यभाव दृढ़ कराए, हम उसकी संगत में नहीं रहते। हम ऐसे लोगों की संगत करते हैं, जो सदैव दूसरों के दोष ढूँढने में लगे रहते हैं।

मंदिर में हर प्रकार के लोग मिल जाएँगे, लेकिन अगर हम अपना भला चाहते हैं, तो ऐसे लोगों की संगत में न बैठें। **अगर हम तरक्की कर लेना चाहते हैं, तो ऐसे के संगत में रहे, जो**

हमें साधु के साथ जोड़े रखे; साधु से दूर नहीं करे – जो साधु को व्यावहारिक ढंग से न देखता हो।

* बातें खाली सभा में कहने के लिए या ऐसे सूत्र फ्रेम करके रखने के लिए नहीं हैं। बल्कि ऐसा जीवन जीना होता है। हम सोचते हैं कि ऐसे सूत्र फ्रेम करके दीवार पर लगाने के लिए तो ठीक हैं, पर इन पर आचरण थोड़े ही किया जा सकता है ?

  हमसे बरता नहीं जाता, तो कबूल करके भजन करें। पर, क्यूं एम्फसाईज़ करें कि ये बरतने के लिए नहीं है; ये तो लिख कर दीवार पर लगाने के लिए है।

  काकाजी ने जो सूत्र दिए हैं उनके अनुसार यदि जीवन जीएँ, तो छलांग लग जाए। हमें जीना नहीं है – जी सकते नहीं हैं। दूसरे जीते हैं इससे जलन होती है, इसलिए उसकी बात को काट देते हैं।

* 'साधु की हर क्रिया हितकारी है, मंगलकारी है' – यह अगर माना हो, तो निर्दोषबुद्धि रहेगी।

* विमुख प्रकरण हुआ तो हम तीन को फॉलो करते थे – काकाजी, पप्पाजी और स्वामिजी। हमने कभी भी इन तीनों की बातों में यह नहीं सुना कि यदि बापा ने इसके बजाय ऐसा किया होता तो अच्छा होता या इसके बजाय बापा ने यह उपाय लिया होता, तो अच्छा था। **काकाजी** ने तो बहुत स्पष्ट रूप से कह दिया था –

  यह चैतन्य का रास शुरू हुआ है। भविष्य में चैतन्य स्वरूपों का जो इतिहास बापा स्वर्ण अक्षरों में लिखना चाहते हैं – उसका कार्यक्रम शुरू हुआ है।

  पप्पाजी ने भी जैसे ही संस्था का ठहराव पढ़ा, वैसे ही ***'विमुख नारायण की जय हो'*** **– कह कर के रसोई दी थी!**

* साहेबजी ने अबकी बार बात की थी कि जब संस्था ने हमें विमुख किया, तब साहेब वगैरह को काकाजी, पप्पाजी और बा के प्रति ऐसा भाव था कि उस समय वे जो कहते, वे वैसा ही कर लेते थे। पर, काकाजी ने साहेब को यह कह कर बापा के पास भेजा –

  तुम गोंडल जाओ और पूछो कि हमें क्या करना है ?

  साहेब गए थे और मिले बापा को!

  बापा ने कहा – *तुम दादुभाई, बाबूभाई के साथ रहो!*

* मन को पसंद नहीं भी हो - मन दुःखी भी होता हो या कुछ और करने की इच्छा हो; लेकिन भगवान और संत जो कहें, वह सच्चाई से फट से कर ले – उसे ही सरल कहा जाए। पर, *'मुझसे नहीं होगा'* – ऐसा सोचने या कहने वाला सरल नहीं है।

* संत हमारे साथ चाहे हमारे जैसे ही होकर रहें, फिर भी हम मानें कि भले ही वे दिखते हैं हम जैसे, लेकिन हैं दिव्य – 'गोकुल गांव को पिण्डो न्यारो!' योनि ही अलग है, वे अलग कॉन्सियसनेस से जीते हैं; हमारी तरह लॉजिक से नहीं जीते।

* **भगवान की मूर्ति का सुख लेना हो, हर प्रकार से सुखी होना हो, तो संप, सुहृद्‌भाव और एकता रखें।**

* शास्त्रीजी महाराज किसी की भी बुराई सुनते नहीं थे। कइयों को ऐसा रहता था कि ये वड़ताल से आए हुए हैं; अगर हम वड़ताल संस्था की इधर-

उधर की बातें करेंगे, तो स्वामी खुश हो जाएँगे। पर, 'गुणातीत नूर' की वो ख़ानदानी ही नहीं है।

* **काकाजी ने बहुत शुरुआत में मुझसे कहा था कि व्यावहारिक रीति से सत्संग में वर्तोगे, तो सत्संग का विकास नहीं कर पाओगे। संबंध देखकर व्यवहार करोगे, तो सत्संग का विकास होगा।**

* एक बार मुंबई में काकाजी दोपहर को तो एकदम ठीक थे। साढ़े बारह बजे खाना खाकर सो गए, उठे तो बीमार! सेवकों ने एकदम वैसे ही पूछा – शुं थई गयुं काकाजी? तो काकाजी ने इसका जवाब दिया– *तुम सब के कारण!*

  सब विचार में पड़ गए।

  फिर समझाया: *तुम सब जो साथ में रह कर मेरे प्रति मायिकभाव, मनुष्यभाव परखते रहते हो, उसकी सजा तुम्हें न मिले, सो वो मैंने अपने शरीर पर ले ली।*

  साधु की कितनी दया होगी हम पर? यह सोचें तो पता लगे।

* एक बार गोरधनकाका ने कहा था कि सामान्य संजोगों में तो हम सभी 'एकांतिक' हैं, भगवान के पक्के भगत हैं; पर, जब देशकाल आए, हमारी बात बनती न हो, हमारा काम न होता हो, टेंशन जाता न हो तब भी हम साधु के प्रति यही भरोसा दृढ़ पकड़े रखें कि साधु मेरे हैं और वे मेरा अहित नहीं होने देंगे। इसी खुमारी में जिएँ और साधु के साथ ऐसा संबंध बनाए रखें – ऐसा नहीं कि दूसरे रूम में जाकर बैठ जाएँ।

* हमारी युगल उपासना है। जिसे भगवान की पहचान हुई, भगवान से संबंध हुआ उसका एक पांव अक्षरधाम में। **जिसे भगवान और साधु दोनों की पहचान हुई, उसके दोनों पांव अक्षरधाम में।** बहुत गहरी बात है।

  एक पांव पर हम कितनी देर खड़े रहेंगे? 'भगवान और संत' रूपी – दोनों पांवों पर खड़े रहेंगे, तो आसानी से खड़े रहेंगे।

* किसी भगत के प्रति हमें बेरुखी हो जाए, तो वहीं टाल देनी चाहिए – महिमा समझ कर, भजन करके, किसी भी तरह। नहीं तो ऐसा होगा कि जब साधु उस भगत का बखान करेगा, तो उस भगत के साथ साधु का संबंध देख कर हमारे मन में आएगा कि साधु इसका पक्ष लेते हैं – इसको फेवर करते हैं और हम में रोष उत्पन्न होगा।

* ५१ भूत हमारे भीतर में चिपके हुए हैं। भगवान के भक्तों के प्रति दिव्यभाव रखेंगे, तो वो ५१ के ५१ भूत जो भीतर में चिपके हुए हैं, वे भाग जाएँगे। यह आशीर्वाद मिल गया है। लेकिन हमें इन बातों पर विश्वास होना चाहिए। साधु ने जो बात की है, उसे आज़माना चाहिए।

  शांतिभाई साहेब ने इस बार यह बात की है कि **जो ज्ञान सुना, उस पर अब हम चलें और आजमाएं।**

* 'बड़े संत जो स्वभाव रखते हैं, वो हमारे कल्याण के लिए होता है।' कितनी बड़ी बात (योगीवाणी में) लिख दी? ऐसा एक वचनामृत है – गढडा अंत्य. चौदहवां। बड़े संत बाह्यदृष्टि से वर्तते दिखाई दें, वो तो अनंत जीवों को माया से पार करने के लिए। उनमें हमें अगर कोई दोष नज़र आता है, तो वो हमारी कोई कुमति है।

भारत सरकार के पूर्व केन्द्रीय मंत्री एवं गुणातीत समाज के आत्मीय प.भ. काशीरामभाई राणा साहेब को श्रद्धांजलि...

गुजरात के सुरत निवासी, पूर्व केन्द्रीय मंत्री एवं **गुणातीत समाज के आत्मीय स्वजन प.भ. काशीरामभाई राणा साहेब ३१ अगस्त २०१२** की मध्यरात्रि को करीब १:३० बजे मॉसिव हार्ट एटैक से **अमदावाद में अक्षरनिवासी हुए।** वहाँ से उन्हें सूरत–उनके निवास स्थान ले जाया गया और दूसरे दिन सायं ५:०० बजे उनका अंतिम संस्कार हुआ।

प.भ. राणा साहेब **प्रगट ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसाद-स्वामिजी** से खूब जुड़े हुए थे। उनसे प्राप्त आत्मीयता का पीयूष पीकर करीब १२ साल पहले वे दिल्ली–प.पू. गुरुजी के संपर्क में आए और **दिल्ली के गुणातीत समाज का अभिन्न अंग बन गए!** इसी **अपनेपन और प्रेम के वश** प.पू. गुरुजी के वचन से, **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के सम्मान में** उन्होंने 'आऊट ऑफ धी वे' जाकर **सरकार द्वारा 'डाक टिकिट' जारी करवाने का असंभव कार्य किया।** माननीय श्री राणा साहेब के प्रयास के फलस्वरूप **३० मार्च २००३ को** तत्कालीन केन्द्रीय मंत्री माननीय श्री अरूण शौरी के वरद् हस्तों से **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की 'डाक टिकिट' जारी हुई।** गुणातीत समाज के इतिहास में तो यह तारीख स्वर्णाक्षरों से लिखी ही गई, साथ ही प.भ. राणा साहेब की भी यह सेवा 'अक्षरधाम' में लिखी गई!

इसी प्रकार **सूरत के बॅप्स मंदिर के लिए** गुजरात सरकार से **एक रुपये की 'टोकन प्राइज़' पर ज़मीन दिलवाने का** इनका **योगदान** भी हम कभी भी भूल नहीं पाएँगे।

२००५ में दिल्ली–'अक्षरज्योति' की **हमारी पू. परछाईं दीदी** की दोनों किडनी अचानक फेईल हो गई, तब अमदावाद के 'सिविल अस्पताल' में उनका **किडनी ट्रान्सप्लान्ट का ऑपरेशन** करवाने के लिए ले गए थे। वहाँ भी **प.भ. राणा साहेब ने** अपनी पहचान से खूब सहायता की। यहाँ तक कि **अपनी लड़की की भाँति चिंता करते हुए** वे ऑपरेशन के दिन सुबह-सुबह सूरत से अमदावाद आकर **सारा दिन हॉस्पिटल में ही बैठे रहे** और उसके बाद उन्हें देखने आते रहे।

यूँ, राजनीतिक माहौल में ओत-प्रोत होने के बावजूद, एक सत्संगी के रूप में **प.भ. राणा साहेब ने** कुटुंबभाव से जीते **गुणातीत समाज को तो अपना कुटुंब माना ही, सभी सत्संगियों को भी वे अपने निजी लगते।** दो बार तो वे **प.पू. गुरुजी एवं सत्संगियों के साथ 'मनाली' शिविर में गए थे।** दिल्ली में वे जब भी प.पू. गुरुजी से मिलने आते या किसी उत्सव में आते, तब सत्संग समाज को संबोधित करते हुए **उन्होंने हमेशा धर्म की, संत की महिमा की ही बातें की। उनकी बातों में हमने कभी भी राजनैतिक रंग नहीं पाया।**

कैसी सांकेतिक बात कही जाए कि **३० अगस्त की दोपहर को** तो फोन पर उन्होंने **प.पू. गुरुजी से** भलीभाँति **बात की** और मध्यरात्रि को तो...? अंदर ही अंदर **उनकी चेतना प.पू. गुरुजी जैसे प्रभुधारक संत से कैसी जुड़ी होगी** कि जीवन के अंतिम दिन फोन पर बात हो गई... प.भ. राणा साहेब ने गुणातीत समाज की जो अभूतपूर्व सेवा की है, उसे कभी भी भुलाया

नहीं जा सकेगा। भगवान स्वामिनारायण एवं उनके संतों के संबंध से, अंत समय में प्रभु खुद उनकी चेतना को मक्खन में से बाल की भाँति, अपने धाम में ले गए होंगे।

प.भ. राणा साहेब के अकस्मात् निधन से उनके परिवार एवं देश को – खास करके गुजरात को – बहुत बड़ी क्षति पहुँची है। उनकी कमी तो पूरी नहीं हो पाएगी, पर एक बात भी विश्वास से मानें कि **प्रभु ने व्यावहारिक और आध्यात्मिक दृष्टि से उनकी जरूर रक्षा की होगी।** उनके दोनों सुपुत्र – **प.भ. विजयभाई** और **प.भ. दीपकभाई** एवं परिवार, प.भ. राणा साहेब की भाँति, संतों से संबंध प्रगाढ़ करते हुए खूब बल पाएँ, इसी भावना और अक्षरनिवासी हुए प.भ. राणा साहेब के प्रति श्रद्धांजली अर्पण करने हेतु प.पू. गुरुजी ने सूरत जाने का कार्यक्रम बनाया। उन दिनों वहाँ खूब बारिश हो रही थी। फिर भी, प.भ. राणा साहेब के संतों के साथ के संबंध को देखते हुए **प.पू. गुरुजी ४ सितंबर** की सायं लगभग ५:०० बजे फ्लाईट से **सूरत पहुँच कर प.भ. राणा साहेब के घर गए।** वहाँ **प.भ. राणा साहेब के सुपुत्रों से खूब बलभरी बातें की** और **प.भ. राणा साहेब की भाँति सत्संग से जुड़े रहने का आदेश देकर**, प.भ. किशोरभाई देसाई के घर भोजन करके, अपने ठहरने की जगह चले गए और... **५ सितंबर की दोपहर** को प.भ. धनंजयभाई के घर भोजन करके **मुंबई जाने के लिए निकले...**

मुंबई - पवई में अधिक मास के निमित्त १८ अगस्त से १६ सितंबर तक 'गुणातीत स्वरूप दर्शन पारायण' चल रही थी। २६ अगस्त से इंटरनेट के द्वारा प.पू. गुरुजी एवं दिल्ली के मुक्तों ने पारायण का लाईव टॅलीकास्ट देखा था। प.पू. भरतभाई एवं प.पू. वशीभाई व्यासपीठ पर बैठ कर ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के जीवन प्रसंगों को जिस तरह बताते, उससे सभी को मानो एक चस्का लग गया कि कब रात के आठ बजें और पारायण सुनने को मिले। कई प्रसंग तो सभी को मालूम भी नहीं थे। **प.भ. राजेन्द्र जैनजी** लम्बे अरसे के बाद दोबारा मंदिर आने लगे हैं। वे एक-दिन पारायण के समय किसी काम से आए, तो रोज़ाना ही आने लग गए। दो-तीन दिन उन्हें लगातार आता देख कर प.पू. गुरुजी ने उनसे आश्चर्य से पूछा –
आप इतना मंदिर भी नहीं आ पाते और काकाजी के दर्शन भी नहीं किए, तब भी अब रोज़ कैसे आ जाते हो?
वे बोले – *गुरुजी, मुझे ये बातें सुनने में खूब आनंद मिलता है, इसलिए रोज़ आ जाता हूँ।*

तब **प.पू. गुरुजी ने समझाया –**
एक 'ब्रह्मसूत्र' है – 'आनंदोब्रह्म'! 'ब्रह्म' का लक्षण है आनंद प्रदान करना और काकाजी तो थे ही ब्रह्मस्वरूप। यूँ, ख्याल पड़ता है कि काकाजी के रूप में हमें एक ऐसी दिव्य विभूति मिली है कि नए-पुराने हर एक को उनके दर्शन करने, परावाणी सुनने या प्रसंग सुनने से आनंद की अनुभूति होती है।

सो, पवई - पारायण में हाज़िर होने के लिए प.पू. गुरुजी सूरत से नॉन स्टॉप बाय रोड रात को करीब पौने नौ बजे, सबको सरप्राईज़ देते हुए, पवई मंदिर पहुँचे। तब प.पू. वशीभाई व्यासपीठ पर बैठ कर, ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के प्रसंग बताते हुए, प.पू. गुरुजी का ही ज़िक्र कर रहे थे। प.पू. गुरुजी को आता देख कर एक सैकण्ड के लिए तो प.पू. वशीभाई एवं सभी एकदम चकित हो गए और प.पू. गुरुजी के ऐसे सरप्राईज़्ड जॅस्चर से आनंदित होकर बोल उठे – ***गुरुजी, धीस इज़ चीटिंग!***

तीनों दिन सभा में प.पू. गुरुजी ने ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज से संबंधित बातें करते हुए कई प्रसंगों के मर्म बताए। प.पू. गुरुजी और कहीं भी न जाकर मुक्तों के संग पवई में ही रहे और... **८ सितंबर** की सुबह ग्यारह बजे की फ्लाईट से दिल्ली के लिए रवाना हुए।

कल्याण योजना में जुड़ा एक और स्रोत 'स्वामिनारायण अन्डरपास रोड'!

तुम्हारे द्वारा कई सत्कर्म करवाने हैं और मेरी जिम्मेदारी है, तो हिचकना नहीं।

– ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज, १५.७.१९७०

वर्षों पहले **प.पू. गुरुजी पर अपनी प्रसन्नता लुटाते हुए ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज द्वारा दिए गए** उपरोक्त **आशीर्वाद** समय-समय पर साकार होते नज़र आ रहे हैं।

प.पू. गुरुजी ने अथक् प्रयास से हमारी उपास्य मूर्ति भगवान स्वामिनारायण एवं अपने प्राणपुरुष ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के प्रति गुरुभक्ति अदा करते हुए **२४ फरवरी १९९०** को दिल्ली नगर निगम द्वारा अशोकविहार के मुख्य मार्ग का नाम **'स्वामिनारायण मार्ग'** एवं अशोकविहार फेज़-३ से गुज़रती लेन का नाम **'काकाजी लेन'** रखवा कर मानो जन-कल्याण का मार्ग खोल दिया।

भगवान स्वामिनारायण के वरदान हैं–

जो भी जाने-अनजाने में 'स्वामिनारायण' नाम लेगा, उसका मैं कल्याण करूँगा।

साथ ही, इनका नामकरण करते हुए **ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी एवं प.पू. साहेबजी** ने आशीर्वाद देते हुए कहा था–

यह रास्ता 'कल्याण' का रास्ता बना... यहाँ से जो भी गुज़रेगा, वो नाम तो पढ़ेगा ही, उन सबका कल्याण हो जाएगा..

इसी प्रकार, **१९ सितंबर २०१२ – गणेश चतुर्थी** के मंगलकारी दिन सुबह साढ़े दस बजे दिल्ली–उत्तरी नगर निगम की प्रथम **महापौर श्रीमती मीरां अग्रवालजी की अध्यक्षता, नेता-सदन श्री महेन्द्र नागपालजी, पूर्व पार्षद श्री देवराजजी की उपस्थिति** एवं **प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, पू. अश्विनभाई, पू. घनश्यामभाई, पू. हेमंतभाई मर्चंट की निश्रा में** 'दिल्ली गुणातीत समाज' की बहनों की प्रेरणा मूर्ति **प.पू. दीदी के वरद् हस्तों** जी.टी. रोड को स्वामिनारायण मार्ग से जोड़ते मार्ग का नाम **'स्वामिनारायण अन्डरपास रोड'** रखा गया।

नामकरण से पूर्व हुई छोटी-सी समारोह सभा में **प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी** ने **'अन्डरपास की गाथा'** नामक कविता के रूप में अपनी भावना व्यक्त की। **माननीया श्रीमती मीरां अग्रवालजी, श्री महेन्द्र नागपालजी, श्री देवराजजी ने** समारोह में उपस्थित भक्तों व मेहमानों को **संबोधित किया** और **प.पू. वशीभाई एवं प.पू. दीदी ने आशीर्वाद दिया।** स्वामिनारायण संप्रदाय के संतों की स्त्री-पुरुष मर्यादा के मद्देनज़र **प.पू. गुरुजी** इस समारोह में शामिल नहीं हुए, परंतु उन्होंने **लिखित आशीर्वाद भेजा था,** जिसे प.भ. राकेशभाई ने पढ़ कर सुनाया...

पूर्व विधायक **श्री मांगेराम गर्गजी** भी समारोह में पधारे, किन्तु किसी पूर्व निर्धारित कार्यक्रम में भाग लेने के लिए वे कार्यक्रम प्रारंभ होने से पूर्व ही चले गए। विधायक **श्री हरिशंकर गुप्ताजी** भी किसी अन्य कार्यक्रम में व्यस्त होने के कारण इस समारोह में उपस्थित नहीं हो सके।

प.पू. दीदी के प्रति असीम श्रद्धा व प्रेम से जुड़े होने के कारण **पंजाब, हरियाणा, अमदावाद, मुबंई के** कई **आत्मीय भक्त** इस समारोह में सम्मिलित

होने के लिए आए। **सौ. अंजलिभाभी** तो पैर में फ्रैक्चर होने के बावजूद इस समारोह की प्रत्यक्ष दृष्टा बनने के लिए पानीपत से दिल्ली आ गईं। यह, प.पू. दीदी के प्रति उनके प्रेम का प्रतीक है।

जून महीने के अंत में प.पू. गुरुजी से कुछ बातचीत करते हुए **पू. आशिष** ने सहज ही कहा –

जी.टी. रोड को स्वामिनारायण मार्ग से जोड़ने वाले नए अन्डरपास का कोई नाम नहीं है, तो क्यों न इसका नाम 'स्वामिनारायण अन्डरपास रोड' रखवा दिया जाए।

जैसा कि ब्रह्मस्वरूप **काकाजी महाराज** कहते– *हमारी भावना को पंख आते हैं;* उसी दिन शाम को, दिल्ली नगर निगम के चुनाव के दौरान खूब अपनेपन से जुड़ी उत्तरी नगर निगम की **प्रथम महापौर श्रीमती मीरां अग्रवालजी** आकस्मिक मंदिर आ गई थीं और... प.पू. गुरुजी ने यह प्रस्ताव रखा। श्रीमती मीरां अग्रवालजी ने तत्काल इस प्रस्ताव पर कार्यवाही शुरू कर दी। जुलाई के प्रथम सप्ताह से सरकारी औपचारिकताएँ प्रारंभ हुईं और दो महीने की अल्पावधि में तो उद्घाटन की तिथि भी निश्चित हो गई एवं प.पू. दीदी के कर-कमलों से 'स्वामिनारायण अन्डरपास रोड' का उद्घाटन भी हो गया!

हाल ही में पवई में हुई अधिक मास की पारायण के दौरान दर्शन देने के लिए पधारे **प्रगट ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामिजी** से प.पू. वशीभाई ने जब इस बारे में बात की, तो वे भी आश्चर्यचकित हो गए कि **केवल दो महीने के अंतराल में यह कार्य हो गया!**

वाकई, **माननीया मीरांजी** ने जिस अपनेपन से इस कार्य को संपन्न कराया, उसके लिए 'धन्यवाद' शब्द तो बहुत छोटा है ही; **प.पू. गुरुजी** के शब्दों में – ***उनकी कार्यशैली क़ाबिल-ए-तारीफ़ है।*** प.पू. गुरुजी जैसे प्रभुधारक संत के वचन से उनके द्वारा एक बहुत बड़ा सत्कर्म हो गया!

और... सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि **अपने रोम-रोम में ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज को प.पू. गुरुजी ने ऐसा अखंड धारा है कि प्रभु की सुवास से भरपूर सभी कार्य सहज ही हो जाते हैं। ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज** ने उन्हें आशीर्वाद जो दिए हैं – ***'तुम्हारे संकल्प में अचूक ताक़त है!'***

पर, स्वामीसेवकभाव के मूर्तस्वरूप प.पू. गुरुजी सदैव अपना सामर्थ्य छिपा कर रखते हैं, जो 'गुणातीत संत' का लक्षण है। ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज ने ऐसे अनूठे संत की भेंट देकर हमें धन्यता प्रदान की है। तो, तनिक भी समय गवाँए बिना उनके अभिप्राय की भक्ति में हम हर प्रकार से जुड़ जाने के लिए तत्पर रहें –ऐसी सूझ भगवान स्वामिनारायण एवं सभी गुणातीत स्वरूपों हमें दें यही प्रार्थना!

अन्नकूटोत्सव

दिनाँक 14 नवंबर, 2012, बुधवार की सुबह

गुणातीत कुनबे का वार्षिक स्नेहमिलन – 9:30 से 11:30

अन्नकूट आरती – 11:45 बजे

सपरिवार ईष्ट मित्रमंडल सहित पधारने आपको हार्दिक निमंत्रण है।

स्थान : श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर,

'ताड़देव', काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग, अशोकविहार -III , दिल्ली - 52

भजन

(राग: तेरी मेहफ़िल में किस्मत...)

काकाजी के पैगंबर का नज़ारा हम भी देखेंगे,
शामोसहर बड़ी आँखों से ब्रह्मरस हम भी पीएँगे, -२
अजी हाँ... हम भी पीएँगे...

आ...
काकाजी के पैगंबर का नज़ारा हम भी देखेंगे,
ख़ुदा के नूर से करके मुहब्बत हम भी जीएँगे, -२
अजी हाँ... हम भी जीएँगे...

आ...
ख़ुदा से हो नहीं ताल्लुक तो जीने की वजह क्या है,
कदम भरने से पहले पूछ लें, तेरी रज़ा क्या है,
कदम भरने से पहले हाँ... हाँ... हाँ...
कदम भरने से पहले पूछ लें, तेरी रज़ा क्या है,
ख़ुदी को भूल, मरज़ी में तेरी अब हम भी जीएँगे...-२
अजी हाँ... हम भी जीएँगे...

आ...
काकाजी की पनाह पाई, मिले गुरुजी हमें जब से,
बड़ी किस्मत से मेरा हो गया तआर्रुफ अनलहक़ से,
बड़ी किस्मत से, जीहाँ.... हाँ... हाँ...
बड़ी किस्मत से मेरा हो गया तआर्रुफ अनलहक़ से,
उनके फ़रमान पे करके फ़नां फ़ितरत हम जीएँगे...-२
काकाजी के पैगंबर का नज़ारा हम भी देखेंगे,
अजी हाँ... हम भी देखेंगे...

आ...
तेरा ज़ाहिद तेरा अज़मत है, मेरा हो अज़ीज़-ए-दिल
परस्तिश में तेरी उसकी इबादत भी रहे शामिल
परस्तिश में तेरी, हाँ... हाँ... हाँ...
परस्तिश में तेरी उसकी इबादत भी रहे शामिल
ख़ुशी में उसकी अब दुनिया लुटा कर हम भी जीएँगे... -२
काकाजी के पैगंबर का नज़ारा हम भी देखेंगे,
ख़ुदा के नूर से करके महोब्बत हम भी जीएँगे, -२
अजी हाँ... हम भी जीएँगे... -२

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि.	26.9.'12, बुधवार	—	जलझीलनी एकादशी–व्रत, वामन जयंती
(2)	दि.	28.9.'12, शुक्रवार	—	अनंत चतुर्दशी–गणपति विसर्जन
(3)	दि.	30.9.'12, रविवार	—	ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज – स्मृति पर्व
(4)	दि.	4.10.'12, गुरुवार	—	ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज – स्मृति पर्व
(5)	दि.	10.10.'12, बुधवार	—	भगवान श्री स्वामिनारायण – स्मृति पर्व
(6)	दि.	11.10.'12, गुरुवार	—	एकादशी, ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज – स्मृति पर्व
(7)	दि.	12.10.'12, शुक्रवार	—	ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज – स्मृति पर्व
(8)	दि.	13.10.'12, शनिवार	—	मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी एवं ब्रह्मस्वरूप भगतजी महाराज – स्मृति पर्व
(9)	दि.	16.10.'12, मंगलवार	—	नवरात्रे प्रारंभ
(10)	दि.	24.10.'12, बुधवार	—	**दशहरा, प्र.ब्र.स्व.प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का पार्षदी दीक्षा दिन**
(11)	दि.	25.10.'12, गुरुवार	—	एकादशी, व्रत
(12)	दि.	27.10.'12, शनिवार	—	मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी अंतर्धान तिथि
(13)	**दि.**	**29.10.'12, सोमवार**	—	**शरदपूर्णिमा, मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामिजी का प्राकट्य दिन** **प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का भागवती दीक्षा दिन** **प.पू. दिनकरभाई की प्राकट्य तिथि**
(14)	दि.	31.10.'12, बुधवार	—	ब्रह्मस्वरूप जागास्वामिजी की जन्मजयंती
(15)	दि.	10.11.'12, शनिवार	—	एकादशी, व्रत
(16)	**दि.**	**11.11.'12, रविवार**	—	**धनतेरस (अशोकविहार मंदिर में 'धनपूजा'– सुबह 10:00 से 11:30)**
(17)	दि.	12.11.'12, सोमवार	—	अक्षर चौदस
(18)	**दि.**	**13.11.'12, मंगलवार**	—	**दीवाली (अशोकविहार मंदिर में 'शारदा पूजन'– सायं 5:15 से 6:45)**
(19)	**दि.**	**14.11.'12, बुधवार**	—	**अन्नकूटोत्सव, नूतन वर्ष–विक्रम संवत २०६९ प्रारंभ** **दिल्ली गुणातीत कुनबे का वार्षिक स्नेहमिलन– सुबह 9:30 से 11:30** **अन्नकूट आरती – सुबह 11:45 बजे**
(20)	दि.	15.11.'12, गुरुवार	—	**भैयादूज**
(21)	दि.	18.11.'12, रविवार	—	**लाभपंचमी**
(22)	दि.	24.11.'12, शनिवार	—	प्रबोधिनी एकादशी–व्रत, तुलसी विवाह-प्रारंभ; *'अक्षरज्योति' में ठाकुरजी के समक्ष सब्जी हाट लगेगी।*
(23)	दि.	28.11.'12, बुधवार	—	**देवदिवाली**, तुलसी विवाह-समाप्त, श्री गुरुनानक जयंती

१९ सितंबर २०१२, बुधवार - गणेश चतुर्थी
प.पू. दीदी के वरद् हस्तों 'स्वामिनारायण अन्डरपास रोड' नामकरण

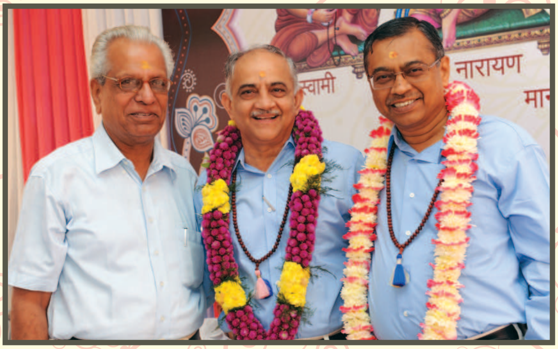

माननीया महापौर मीरांजी की कार्यशैली क़ाबिल-ए-तारीफ़ है।

– प.पू. गुरुजी

Air Mail **R.N.I. 28971/ 77**

'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched Bimonthly

If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :-*

SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI

'Taad-dev', Kãkãji Lane, Swãminãrãyan Mãrg, Ashok Vihãr-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2730 1327

Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A 6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052